

प्रेस विज्ञप्ति

मेरा गांव मेरा गौरव योजना

राज्य के 135 चयनित गांवों में तकनीकी प्रसार कार्य शुरू: कुलपति प्रो. गहलोत

वेटेनरी विश्वविद्यालय का पहला वैज्ञानिक दल गांवों के लिए रवाना

बीकानेर, 1 अक्टूबर। "मेरा गांव मेरा गौरव" योजना के अन्तर्गत पांच वैज्ञानिकों के दल को वेटेनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने गुरुवार को झंडी दिखाकर गांवों के लिए रवाना किया। दल के प्रभारी प्रो. ए.के. कटारिया के नेतृत्व में डॉ. नलिनी कटारिया, डॉ. मनीषा माथुर, डॉ. नजीर मोहम्मद और डॉ. प्रमोद कुमार लूनकरनसर क्षेत्र के सुरनाणा, दुलमेरा, धीरेरा, कारी और कुजटी गांवों का सर्वे कर प्रसार, पशुपालन और कृषि संबंधित तकनीकी और प्रसार कार्यों से ग्रामवासियों को अवगत करवायेंगे। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि माननीय प्रधानमंत्री की



मेरा गांव मेरा गौरव योजना में विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के 135 ग्रामों का चयन किया गया है। जिसमें विश्वविद्यालय के जयपुर और नवानियां (उदयपुर) तथा अन्य जिलों में स्थित संस्थानों के वैज्ञानिकों के दल बनाए गये हैं। प्रत्येक दल में पांच वैज्ञानिक शामिल कर 5 गांवों का कार्य क्षेत्र निर्धारित किया गया है। वेटेनरी महाविद्यालय, बीकानेर में 12 टीमों को

60 गांवों का जिम्मा दिया गया है। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि सभी दलों के वैज्ञानिकों को अपने निर्धारित गांवों का भ्रमण कर गांव के किसान-पशुपालकों को तकनीकी एवं अन्य परामर्श सेवाएं व्यक्तिगत रूप से सुलभ करवानी हैं। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि इस योजना में वेटेनरी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक चयनित गांव में कृषकों से संवाद स्थापित करेंगे। किसानों को सामाजिक रूप से फोन एवं मोबाइल संदेश द्वारा कृषि एवं पशुपालन क्रियाओं की जानकारी पहुँचाना और गांव की परिस्थितियों के अनुसार सम्भावित कृषि प्रणाली पर मौसम के अनुसार कृषि एवं पशुपालन साहित्य भी उपलब्ध करवाया जाएगा। वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कृषि एवं पशुपालन निवेश, ऋण, बीज, उर्वरक, रसायन, कृषि यंत्र, कृषि जलवायु, बाजार आदि से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाई जाएगी। कृषि वैज्ञानिक समाचार पत्रों, सामुदायिक रेडियो आदि के माध्यम से भी क्षेत्र विशेष में किसानों एवं पशुपालकों को जागरूक करना शामिल है। स्थानीय स्तर पर किसानों के लिए कार्यरत संगठनों एवं संस्थाओं जैसे स्वयंसेवी संस्थाओं, कृषक संगठन, आत्मा, अन्य सरकारी विभागों व उनके कार्यक्रमों के बारे में कृषकों को अवगत करना है। राष्ट्रीय महत्व के संवेदनशील मुद्दों जैसे भारत स्वच्छता अभियान, जलवायु परिवर्तन, जल संरक्षण, मृदा उर्वरकता आदि विषयों पर भी किसानों को समय-समय पर जागरूक किया जाएगा। आवश्यकतानुसार चयनित सम्पर्क गांव का भ्रमण कर किसानों की बैठक आयोजित करके संबंधित संस्थानों से विशेषज्ञों की भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। वैज्ञानिकों द्वारा ग्रामीण स्तर पर तकनीकी समस्याओं की पहचान कर आगामी अनुसंधान कार्यक्रमों में उपयोग करना और गांव से सम्बन्धी तकनीकी, सामाजिक व आर्थिक आंकड़े सृजित करना व किये गये कार्यों की तिमाही रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगे। यह रिपोर्ट भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली को प्रेषित की जाएगी। वैज्ञानिक दल अपने भ्रमण में गोष्ठी-सम्मेलन, आयोजित कर तकनीकी विकास से सम्बंधित साहित्य का वितरण भी करेंगे। वे पशुपालन और कृषि संबंधित विभागों से सम्पर्क कर उनके समाधान के प्रयत्न करेंगे। ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए मोबाइल आधारित सलाहकारी सेवाएं भी प्रदान करेंगे।

समन्वयक

जन सम्पर्क प्रकोष्ठ